अमृतलाल नागर के उपन्यासों में मुस्लिम पात्रों की चित्रण–कला : सामाजिक और ऐतिहासिक परिदृश्य में

पुष्प लता कुमारी, शोध छात्रा, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

चरित्र–चित्रण उपन्यास का कथानक के पश्चात् सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाने वाला उपकरण या अंग है। बिना पात्र–सर्जना के उपन्यास का कथानक अपूर्ण होता है, क्योंकि पात्र ही वह माध्यम है जिसके द्वारा लेखक अपनी बात को पाठकों तक सीधे पहुँचा पाने में समर्थ हो पाता है। पात्रों के माध्यम से लेखक यह भी दिखाने का प्रयास करता है कि भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में मनुष्य का जीवन किस प्रकार निर्मित, स्थिर, परिवर्तित या विकसित हो पाया है। वास्तव में, उपन्यास मानव–जीवन के चित्रण से सम्बद्ध होता है, अतः उसके चित्रण के आधार पर ही व्यक्ति के व्यक्तित्त्व, उसके बौद्धिक गुण एवं चारित्रिक गुण का पता चलता है। इसके साथ ही विश्लेषणात्मक एवं नाटकीय शैलियों के आधार पर मानव–चरित्र का विश्लेषण उपन्यास की रोचकता एवं रमणीयता का प्रमुख कारण होता है। उपन्यास में पात्रों की सजीवता, यथार्थता एवं समुचित प्रभाव के साथ चित्रण उसकी सफलता का द्योतक है। अतः उपन्यास में पात्रों का सशक्त, प्रभावशाली एवं आदर्श चित्रण आवश्यक है, क्योंकि यह अन्त तक हमारे चित्त एवं हृदय में अमिट प्रभाव बनाए रखता है। चरित्र–चित्रण की सफलता का माप यह भी है कि पाठक और उपन्यास के पात्र के बीच भावनात्मक तादात्म्य स्थापित हो जाए। इन दोनों की पारस्परिक निकटता ही चरित्र–चित्रण की कला है।

उपन्यास में कथानक की अनुकूलता की सिद्धि के लिए युग के अनुसार विविध वर्ग, जाति या धर्म के पात्रों का प्रणयन होना आवश्यक है, अन्यथा विरोधाभास की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अमृतलाल नागर आधुनिक युग के युगीन कथाकार रहे हैं। उनके उपन्यासों में पात्रों के चयन में युग–बोध झलकता है। उन्होंने युग और परिस्थितियों के अनुकूल अपने सामाजिक और ऐतिहासिक उपन्यासों में पात्रों का गठन किया है। उनके उपन्यासों में विविध पात्र–योजना के अन्तर्गत यत्र–तत्र मुस्लिम पात्रों का भी चित्रण किया गया है, क्योंकि भारत में मुस्लिम जनसंख्या कम नहीं है। यद्यपि मुस्लिम पात्रों के चित्रण में उनकी गहरी पैठ नहीं दिखाई पड़ती, फिर भी उन्होंने उनके चरित्र के साथ पूर्णतः न्याय करने का प्रयास किया है।

चरित्र–चित्रण की प्रमुख विशेषताओं में से एक है– पात्र का व्यक्तित्त्व, जो उपन्यास में बहुत मायने रखता है। व्यक्तित्त्व के अन्तर्गत उसका आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्त्व दोनों शामिल रहता है। इसमें पात्र का आकार, रंग, रूप, वेश–भूषा, भाव–भंगिमा इत्यादि सम्मिलित रहते हैं, जिसके द्वारा उसकी पहचान होती है। नागर जी के उपन्यास 'शतरंज के मोहरे' में साठ–पैंसठ वर्ष की मुस्लिम स्त्री मुनियाँ के बाह्य व्यक्तित्त्व का वर्णन इस प्रकार किया गया है, ''सफ़ेद बालों पर मेहँदी, हाथों में मेहँदी, आँखों में सुरमा, टिकली, मिस्सी, कानों में इत्र की फुरहरी, धानी दुपट्टा, गुलाबी कुरता, सर पे झुमका, कानों में करनफूल, नाक में बुलाक़, गले में तौकें, बाँहों में जोशन, हाथों में कड़े और चूड़ियाँ, उँगली–उँगली में अँगूठियाँ, अँगूठों में आरसे, पाँवों में कड़े–छड़े झाँझ,–ग़रज की मुनियाँ अपने ख़याल से उम्र के पैसठवें साल में जवानी की देहली चढ़ रही थी।''[१] वर्णन इतना बारीक है कि ऐसा प्रतीत होता है जैसे नागर जी ने अपने समक्ष किसी मुस्लिम स्त्री को बैठाकर उसका चित्र हू–ब–हू खींच दिया हो।

सामाजिक परिदृश्य से देखें तो हमारे समाज में मुस्लिम नारियों पर अनेक पाबंदियाँ दिखाई पड़ती हैं, जिनमें से एक है पर्दा प्रथा; जिसका जिक्र नागर जी के ऐतिहासिक उपन्यास 'शतरंज के मोहरे' में किया गया है। जिस प्रकार

हिन्दुओं में घूँघट नारी की लज्जा ढँकने का आवश्यक साधन माना जाता है, ठीक उसी प्रकार मुस्लिम स्त्रियों में भी बुरका पर्दा प्रथा का आवश्यक अंग माना जाता है। बिना इसके मुस्लिम स्त्रियाँ घर के बाहर नहीं निकलतीं। इस उपन्यास में रुस्तमअली के आने पर छोटे भाई फतेहअली की बीवी फौरन घूँघट ले लेती है, ''रुस्तमअली की माँ भी बड़े बेटे के अचानक आगमन से लड़ते–लड़ते थम गयी। फ़तेहअली की बीवी ने फ़ौरन घूँघट खींचा और दौड़ती हुई कोठे के ऊपर चली गयी।''[२] वहीं रुस्तमअली की अम्मा, करीमन बुआ से लड़कर घर से बाहर जाते समय भी बुरका लेना नहीं भूलती, ''उसे फुरसत नहीं है। दुलहिन, खूँटी पर से मेरा बुरका उठा और चल तू भी चल चच्ची के याँ। रुस्तम की अम्मा गुस्से से अधिक हड़बड़ाकर बोलीं।''[३] हिन्दुओं की अपेक्षा मुस्लिमों में बुरका स्त्रियों के लिए आज भी अत्यावश्क रूप से प्रचलन में है, क्योंकि उनका धर्म इसकी आज़ादी नहीं देता। इसके विपरीत नागर जी ने आधुनिक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में पर्दा प्रथा का विरोध 'गैहाँबानो' के माध्यम से दिखाया है। 'अमृत और विष' की गैहाँबानो आधुनिक विचारों से लबरेज युवती है। रमेश के प्रति सहज आकर्षण के कारण उसका युवा मन पर्दा करने से हिचकता है। अतः अपने युवा मन से विवश हो, नाना नवाब साहब के विरूद्ध जाकर पर्दा न करने की सकारात्मक पहल करती है, जो निश्चित ही काबिलेतारीफ है, ''बानो अपने–आपको इस समय उन्नत समझ रही थी। उसे पर्दा बेहद काटता था। यों मुसलमानों में अब सैकड़ों लड़कियाँ और औरतें पर्दा नहीं करतीं, मगर बानो मजबूर है, अपने बाप के घर भी मजबूर थी और यहाँ भी। लेकिन आज बानों विद्रोह पर आमादा है। उसका अरमानों घुटा मन अब बाँधे नहीं बँध सकेगा, ये परदा–विद्रोह गोया उसकी पहली निशानी है।''[४]

नागर जी के उपन्यासों में चरित्र–चित्रण के अन्तर्गत पात्रों के बौद्धिक गुणों का भी उल्लेख मिलता है, जो लोक कल्याणकारी एवं प्रभावशाली साबित होता है। इस दृष्टि से 'अमृत और विष' में नवाब साहब का चरित्र ऐसे ही सकारात्मक गुणों से भरपूर दिखाई पड़ता है। रमेश के साथ बातचीत में वे कहते हैं, ''मजहब मेरे नज़दीक एक बड़ी ही पर्सनल (निजी) चीज़ है। मैंने अपनी तमाम उम्र में जहाँ तक बन पड़ा है, नमाज़ कजा नहीं की। रोजों का भी सदा पाबन्द रहा, मगर इसके बाद मैं किसी भी मज़हबी मजलिस में आज तक शरीक़ नहीं हुआ। एक बार जब मैं आजमगढ़ में था, तो कुछ लोग मुझसे मस्जिद बनवाने के लिए चन्दा माँगने आए। मैंने कह दिया कि जनाब नमाज़ घर में पढ़िए। ये मस्जिदें, मन्दिर और गिरजे वगैरह पब्लिक प्लेसेज (जन स्थलों) में, आज के जमाने में नहीं बनवाने चाहिए। पुराने जमाने की बात और थी। आज के जमाने में तो इस जगहों में खुदा के बजाय शैतान रहता है।''[५] इसके अतिरिक्त आधुनिक समाज में बढ़ रहे अनैतिकता के प्रति भी नवाब साहब चिंतित दिखाई पड़ते हैं। इसके लिए वह युवक–युवतियों को संयम बरतने एवं मन को मज़हब की पाबंदी में बाँधे रखने जैसी अच्छी सलाह देते हैं, जो समाज के लिए हितकारी है।

ऐतिहासिक परिदृश्य में देखें तो उस समय के समाज में भी मुस्लिम स्त्रियों की स्थिति अच्छी नहीं थी, खासकर बाँदियों की स्थिति। नवाबों के क्रुर शासनकाल में शाही महलों में बाँदियों की दशा बहुत बुरी थी। उनके लिए जिस प्रकार की सजा का प्रावधान था, वह रोंगटे खड़े कर देने वाला है। नागर जी ने अपने गदरकालीन उपन्यास 'शतरंज के मोहरे' में इसका जिक्र किया है। एक बाँदी को बादशाह सलामत को देखने की इच्छा रखने वाली उसकी सहेली को महल में लाना बहुत भारी पड़ जाता है। पर्दे के पीछे छिपकर खड़ी होने पर नवाब नसीरुद्दीन हैदर उन्हें देख लेता है, ''शाही इशारा हुआ। दोनों बाँदियों के सब कपड़े उतरवाकर विलायती हण्टर की मार शुरू हुई। एक बाँदी का बोल फूटा। उसने बतलाया की दूसरी उसकी सहेली है, कानपुर से आयी है। बादशाह सलामत को देखने की बड़ी इच्छा थी सो वह उसे रसूलन बाँदी की एवज़ में ले आयीं। ..... मगर नसीरुद्दीन को फिर भी तसल्ली न हुई। सामन्ती शासन में बन्दी स्त्रियों और पुरुषों के मर्म–स्थानों में लाल मिर्च भरना अथवा यदि चरम दण्ड देना हो तो मेख़ ठोकना ख़ास सज़ाओं में से था। दण्डस्वरूप स्त्रियों और नवयुवक पुरुषों पर सामूहिक बलात्कार करवाना भी आम चलन में शामिल था।''[६]

नागर जी के उपन्यासों में मुस्लिम स्त्रियों के चरित्र–चित्रण के संदर्भ में उनके वासनात्मक, शोषित एवं षड्यंत्रकारिणी इत्यादि रूपों के भी दर्शन होते हैं। 'शतरंज के मोहरे' में 'दुलारी' एवं 'सात घूँघट वाला मुखड़ा' में 'बेगम समरू' का चरित्र वासनात्मक एवं चरित्रहीन है। दुलारी रुस्तमअली की विवाहिता होते हुए भी अपने देवरों से आँखे लड़ाती है, ''यों देवर और भावज एक ही उम्र के थे, बल्कि वारिस चार महीने बड़ा ही था; लेकिन दुलारी खुली खेली थी, दो बच्चों की माँ थी और वारिस अभी तक अपने आपको मर्द महसूस करने की चाहत लिये घुट रहा था। पिछले पन्द्रह–बीस दिनों से वह घुटन बड़ी तेज़ सनसनाहट के साथ नये जोश का सैलाब बनकर उमड़ पड़ी है।''[७] वहीं दूसरी तरफ वह अपने पड़ोसी नईमउल्ला से भी प्रेम करती थी। अपने प्रेमी से मिलने हेतु वह सुरंग भी खुदवाती है, जहाँ वह उससे छिपकर मिलती थी। दुलारी के इस रहस्यमय चरित्र के लिए उसकी सास उसके लिए 'जादुगरनी' शब्द का प्रयोग करती है। 'सात घूँघट वाला मुखड़ा' में बेगम समरू का चरित्र भी रहस्यात्मकता के आवरण में लिपटा हुआ है। वह हुस्न के जादू एवं प्रेम का स्वांग रचकर एक तरफ जहाँ अपने शौहर नवाब समरू को विश्वास पात्र बनाए रहती है, तो वहीं दूसरी तरफ राजनीतिक महत्त्वकांक्षाओं की आड़ में सेनापति सर टॉमस एवं लवसूल नामक नवयुवक के साथ प्रणय–क्रीड़ाएँ भी करती है, जो अंत में उसके चारित्रिक पतन का कारण बनता है, ''महबूबा को लगा कि यह उसकी सहेली–मालकिन का चारित्रिक पतन है। बेगम का टॉमस से संबंध होने पर उसे यह महसूस नहीं हुआ था क्योंकि बेगम तब भी बेगम थी, सबकी मालकिन, अपने प्रेमी टॉमस की भी। लेकिन आज उसे लगा कि उसकी सखी–स्वामिनी अब लवसूल की विजित दासी हो गई है।''[८]

पुरूषप्रधान समाज में नारी हर तरफ शोषण का शिकार होती है, चाहे वह किसी भी वर्ग, समुदाय या धर्म से संबंध क्यों न रखती हो। हर रूप में उसका शोषण अवश्य दिखाई पड़ता है। 'सात घूँघट वाला मुखड़ा' की 'बेगम समरू' भी पुरूषप्रधान समाज के शोषण का शिकार है। उपन्यास के प्रारम्भ में ही उसका शोषित रूप सामने आता है। बचपन में वह बशीर खाँ के पिता द्वारा खरीदी जाती है और बाद में बड़ी होने पर बशीर खाँ से सच्चा प्यार करने लगती है, किन्तु वह उसे दस हजार अशर्फियों में नवाब समरू को बेच देता है। प्रेम में धोखा खायी मुन्नी उर्फ दिलाराम उर्फ बेगम समरू की स्थिति दयनीय हो जाती है। उसकी आँखों में आँसुओं का सागर उमड़ पड़ता है। वशीर खाँ के विवाह के आश्वासन एवं विश्वास पर ही वह अपना सबकुछ बशीर खाँ को सौंप देती है। स्वयं बेगम समरू के शब्दों में उसका मर्मस्पर्शी चित्रण द्रष्टव्य है, ''मैंने तुम्हें अपना बेशकीमत दिल दिया था। दिल ही नहीं, तुम्हारे फरेब में आकर परसों रात मैं तुम्हें अपनी वह सबसे बड़ी दौलत भी सौंप चुकी जो औरत किसी को ज़िन्दगी में सिर्फ एक बार ही दे सकती है।''[९] यहाँ 'बेगम समरू' के लिए प्रयुक्त विविध नाम परिस्थितियों की उपज है।

नागर जी के ऐतिहासिक उपन्यासों में पुरूषों की अपेक्षा मुस्लिम स्त्रियों को अधिक प्रभावशाली चित्रित किया गया है। 'शतरंज के मोहरे' की 'बादशाहबेग़म' एवं दुलारी और 'सात घूँघट वाला मुखड़ा' की 'बेगम समरू' ऐसी प्रमुख मुस्लिम पात्राएँ हैं जिनके आगे पुरूष भी कठपुतली के समान प्रतीत होते हैं। पूरे उपन्यास में इन तीनों पात्राओं का ही डंका बजता है। ये चरित्र अत्यंत महत्त्वाकांक्षी, घोर अहंकारिणी एवं षड्यंत्रकारिणी है जो अपने सौंदर्य एवं आँसुओं के बल पर अपने महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति करती हैं। 'शतरंज के मोहरे' की 'बादशाह बेगम' का चरित्र राजनीतिक षड्यंत्रों से युक्त है, जो शासन पर अपना अधिकार बनाए रखने के लिए पति बादशाह गाजीउद्दीन हैदर, वजीर आगामीर एवं नवाब नसीरुद्दीन हैदर को अपने अंकुश में रखना चाहती है। इसके लिए वह बादशाह के विश्वासपात्र आगामीर के खिलाफ चक्रव्युह रचती है। दूसरी तरफ नसीरुद्दीन को भी भोग–विलास का आदी बना अपनी ओर करने का प्रयत्न करती है, ''बादशाहबेग़म ने नसीरुद्दीन के न जाने कितने–कितने लाड़ लड़ाये थे, नसीरुद्दीन बादशाहबेग़म की महत्त्वाकांक्षा का प्रतीक था। उसके सहारे वह आग़ामीर से लड़ी, अपने पति गाजीउद्दीन से लड़ी–हर एक के दर्प को अपने अदमनीय अहं के सामने निस्तेज

कर हज़ार आपदाएँ सहते हुए भी बादशाहबेग़म इसी एक सपने को लेकर आगे बढ़ती रही थीं कि नसीरुद्दीन जब बादशाह होगा तब एक–एक से बदले चुका लूँगी, जी के हौसले पूरे कर लूँगी। उसी नसीरुद्दीन से फिर उनकी ठन गयी और ऐसी ठनी कि एक का अन्त हो गया। और अब दूसरे का, स्वयं बादशाहबेग़म का अन्त भी निकट आ पहुँचा था।''[१०] दुलारी इस उपन्यास की प्रमुख षड्यंत्रकारिणी पात्रों में से एक है। वह अपने सौंदर्य के अस्त्र से सबको घायल करती है। वह अपनी कूटनीतिक चालों से नसीरुद्दीन को बादशाह बेग़म की नजरों से बचाकर, उसे उसके पिता से मिलाकर, युवराज की लगाम अपने हाथ में ले लेती है और नसीरुद्दीन के नवाब बनने पर वह स्वयं मलिका–ए–जमानियाँ के पद पर प्रतिष्ठित होती है, ''समग्रतः उसका चरित्र भयानक घात–प्रतिघातों से ग्रस्त चरित्र है। उसमें सौन्दर्य है। किन्तु वह बदचलन है। वह निर्धन है फिर भी महत्त्वाकांक्षिणी, वह अनपढ़ है फिर भी राजनीतिक दाँवपेंच तथा कूटनीति में बड़े–बड़े उस्तादों को भी परास्त करने वाली है। उसके चरित्र की यही भूमिकाएँ उसे नाना संघर्षों में डालती है और उनमें डूबते–उतराते सफलता की बड़ी से बड़ी सीमा का स्पर्श करते हुए भी अन्ततः वह परिस्थितियों के महासागर में विलीन हो जाती है।''[११] इसी प्रकार 'सात घूँघट वाला मुखड़ा' की 'बेगम समरू' का चरित्र भी षड्यंत्रकारी एवं रहस्यमयी प्रतीत होता है। उसका चरित्र विवादास्पद एवं किंवदंतियों से भरा है। वह सर टॉमस से मिलकर नवाब समरू के विरूद्ध षड्यंत्र रचकर हिन्दुस्तान की मलिका बनना चाहती है। इसके लिए वह नवाब समरू की आत्महत्या करने को विवश भी होती है। अन्ततः यह तीनों पात्रायें उपन्यास के अन्त तक आते–आते पतन का शिकार होतीं हैं, क्योंकि इनका चरित्र समाज के विरूद्ध दिखाई पड़ता है जो केवल भोग–विलास एवं अपने स्वार्थ के लिए ही लालायित रहती है।

विश्लेषणात्मक दृष्टि से देखें तो नागर जी के उपन्यासों में इस शैली का प्रयोग भी दिखाई पड़ता है। इसके माध्यम से पात्रों के भावों, मनोवृत्तियों एवं विचारों का विश्लेषण किया जाता है। नागर जी के उपन्यास 'अमृत और विष' में मुस्लिम पात्रा गैहाँबानो के मन का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। रमेश और रानी विवाह के पश्चात् गैहाँबानो के घर भाड़ेदार बनकर आते हैं। तब गैहाँबानो का युवा मन रमेश के प्रति आकर्षित हो उठता है। एक रात रानी की अनुपस्थिति में उसका मन रमेश से मिलने के लिए तड़प उठता है। वह जाने के लिए निकलती है, परन्तु उसके मन में एकाएक अपने नैतिकता संबंधी मूल्यों को लेकर अन्तर्द्वन्द्व शुरू हो जाता है जो उसे ऐसा करने से रोकते हैं और अंत में वह अपने मन से हारकर वापस लौट आती है। नागर जी ने इसका सजीव चित्र अपने उपन्यास में उपस्थित किया है जो द्रष्टव्य है, ''..... कहाँ जा रही है बानो, ये तू क्या कर रही है। मान ले कि तेरा सोचा हुआ न हो और तू खुद ही फँस जाय! बानो के पाँव बँध जाते हैं। वह वहीं की वहीं ठिठक कर रह गयी, उल्टे पाँवों लौट आयी। ..... ''या खुदा, मुझे राह दिखला, या रसूल मेरी बिगड़ी बना। मेरे गुनाहों को माफ़ कर।''[१२] इस प्रकार वह अन्त में अपने चित्तवृत्तियों का दमन कर लेती है।

इसके साथ ही नागर जी के उपन्यासों में नाटकीय शैली का भी सफल प्रयोग दिखाई पड़ता है। इस शैली के माध्यम से लेखक ने पात्रों की मानसिकता का उल्लेख किया है। 'शतरंज के मोहरे' के संदर्भ में यहाँ 'रुस्तमअली' के चरित्र का स्पष्टीकरण दिया गया है। रुस्तम जब अपने मित्रों के साथ घर लौट रहा होता है, तब बातचीत के दौरान यह स्पष्ट हो जाता है कि लड़कियों का कोई मूल्य नहीं। एक बूरे रिवाज के कारण किस प्रकार बेरहमी से उनका जीवन नष्ट कर दिया जाता है। बातचीत का अंश द्रष्टव्य है, ''और तुम्हारे कितने बच्चे हैं रुस्तम?''

''दो। एक लड़का है तीन साल का, और लड़की क़रीब डेढ़ बरस की होगी।''

''लड़की की तो अभी सूरत भी नहीं देखी होगी तुमने।''

''अमाँ लड़कियों को क्या देखना।'' घसीटे ख़ाँ ने कहा।

.....''कम्बख़्त क्या रिवाज़ है उनमें भी, पैदा होते ही लड़कियों को मार डालते हैं।''

''अमाँ अच्छा ही करते हैं। औरत से बढ़कर बदज़ात कोई नहीं, ये नागिनें होती हैं जितनी खूबसूरत उतनी ही ज़हरीली भी।''[१३] उपर्युक्त बातचीत से पुरूषवादी मानसिकता का घिनौना चेहरा सामने आता है। इससे स्पष्ट है कि स्त्रियों के प्रति पुरूष की मानसिकता अच्छी नहीं है।

निष्कर्षतः नागर जी के उपन्यासों में सामाजिक और ऐतिहासिक परिदृश्य में किये गए मुस्लिम पात्रों के चित्रण में, चरित्र–चित्रण कला की लगभग सभी विशिष्टताओं का प्रणयन सफलतापूर्वक हुआ है। इस चित्रण से मुस्लिम पात्रों की स्थिति का भी स्पष्ट उल्लेख मिल जाता है। उनके उपन्यासों में युग और सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप पात्रों के नाम, वेश–भूषा, बोली एवं मानसिक स्थिति का उल्लेख मिलता है। उन्होंने मुस्लिम पात्रों के संदर्भ में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों विचारों वाले पात्रों का चित्रण कर, यह दर्शाने का प्रयास किया है कि समाज में हमेशा सच्चाई एवं अच्छाई की ही जीत होती है। उनके उपन्यासों में गठित विविध मुस्लिम पात्रों का चित्रण सजीव, आदर्श और यथार्थ के निकट प्रतित होता है, इसलिए वह कहीं–न–कहीं पाठकों पर अपनी छाप अवश्य छोड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ

१. अमृतलाल नागर, शतरंज के मोहरे, पृ॰ ३४, २०१३, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली।

२. वही, पृ॰ १३

३. वही, पृ॰ १५

४. अमृतलाल नागर, अमृत और विष, पृ॰ ३५६, २०१३, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

५. वही, पृ॰ ३५०

६. अमृतलाल नागर, शतरंज के मोहरे, पृ॰ २५८, २०१३, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली।

७. वही, पृ॰ १५

८. अमृतलाल नागर, सात घूंघट वाला मुखड़ा, विज्ञप्ति, पृ॰ ८७, २०११, राजपाल एण्ड सण्ज, दिल्ली।

९. वही, पृ॰ १२

१०. अमृतलाल नागर, शतरंज के मोहरे, पृ॰ २९६, २०१३, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली।

११. प्रकाशचन्द्र मिश्र, अमृतलाल नागर का उपन्यास साहित्य, पृ॰ १८९, साहित्य भारती, कानपुर।

१२. अमृतलाल नागर, अमृत और विष, पृ॰ ३५४, २०१३, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

१३. अमृतलाल नागर, शतरंज के मोहरे, पृ॰ ११, २०१३, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली।